



Original Article

21 वीं सदी के हिंदी सिनेमा में चित्रित नारी की समस्याएँ

प्रा. मारुती दत्तात्रय नायकू

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग

कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय, पंढरपुर (स्वायत्त) जिला- सोलापुर (महाराष्ट्र)

Manuscript ID:

IJAAR-C130328

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 138 - 144

Submitted: 21 Jan. 2026

Revised: 30 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. मारुती दत्तात्रय नायकू

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785734

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785734>



Creative Commons



सार:

21 वीं सदी का आरम्भ भारतीय हिन्दी सिनेमा में स्त्रीवादी दृष्टिकोण की नई रोशनी लेकर आया। इक्कीसवीं सदी के हिंदी सिनेमा ने महिलाओं की आकांक्षाओं और सपनों, उनकी समस्याओं और परेशानियों, रोजमर्रा की जिन्दगी के मामूली से लगने वाले किन्तु महत्वपूर्ण मुद्दों को वाणी प्रदान की है। इस सदी की कई ऐसी फ़िल्में हैं, जिसमें महिलाओं की मुख्य भूमिकाओं में साथ उनकी पीड़ा, वेदना, घुटन जैसी समस्याओं को दिखाते हुए उनके आत्मसम्मान को उजागर करने में कई फिल्म निर्देशकों ने प्रयास किया है। इस शोधलेख में हिंदी सिनेमा की इक्कीसवीं सदी में प्रदर्शित हुई कुछ उन फिल्मों को आधार बनाया गया है, जिन्होंने महिला सशक्तिकरण की दिशा में किसी न किसी रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए महिलाओं की समस्याओं से जुड़ते हुए नवीन चेतना का सृजन किया। इस सदी की 'क्या कहना', 'मातृभूमि : अ नेशन विदाउट वुमन', 'वाटर', 'डोर', 'फ़ैशन', 'पिंक', 'इंग्लिश-विंग्लिश', 'क्वीन', 'हिचकी', 'पंगा', 'लिपस्टिक : अंडर माई बुरखा', 'टॉयलेट- एक प्रेम कथा', 'तुम्हारी सुलू', 'थप्पड़' आदि हिंदी फिल्मों में नारी अपनी समस्याओं से संघर्ष करके अपना आत्मविश्वास और आत्मबल समाज के सामने रखती है।

मुख्य शब्द: 21 वीं सदी, हिंदी सिनेमा, फ़िल्में, नारी, स्त्री, किरदार, समस्या, आत्मविश्वास, महिला, निर्देशन, संघर्ष, समाज, परम्परा आदि।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. मारुती दत्तात्रय नायकू. (2026). 21 वीं सदी के हिंदी सिनेमा में चित्रित नारी की समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 138 - 144. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785734>

प्रस्तावना:

हिंदी सिनेमा जिसे आजकल 'बॉलीवुड' नाम से अभिहित किया जाता है। वैसे देखा जाय तो हिंदी सिनेमा मनोरंजन प्रधान और व्यावसायिक रहा है, लेकिन साथ में सामाजिक मुद्दों और समसामयिक घटनाओं की अभिव्यक्ति से

भी यह अछूता नहीं है। शताब्दी से अधिक के अपने गौरवशाली इतिहास में हिंदी सिनेमा ने अनेक ऐसी फिल्मों समाज को दी हैं, जिनमें स्त्री जीवन की विभिन्न समस्याओं का चित्रण तो किया ही गया है किन्तु साथ ही स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में किये गए प्रयास की दृष्टि से भी इनका महत्वपूर्ण



योगदान रहा है। 21 वीं सदी की कई ऐसी फिल्मों हैं, जिसमें महिलाओं की मुख्य भूमिकाओं में साथ उनकी पीड़ा, वेदना, घुटन जैसी समस्याओं को दिखाते हुए उनके आत्मसम्मान को उजागर करने में कई फिल्म निर्देशकों ने प्रयास किया है। इक्कीसवीं सदी के हिंदी सिनेमा ने महिलाओं की आकांक्षाओं और सपनों, उनकी समस्याओं और परेशानियों, रोजमर्रा की जिन्दगी के मामूली से लगने वाले किन्तु महत्वपूर्ण मुद्दों को वाणी प्रदान की है। इस शोधलेख में हिंदी सिनेमा की इक्कीसवीं सदी में प्रदर्शित हुई कुछ उन फिल्मों को आधार बनाया गया है जिन्होंने महिला सशक्तिकरण की दिशा में किसी न किसी रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए महिलाओं की समस्याओं से जूझते हुए नवीन चेतना का सृजन किया। अपने संघर्ष के बलबूते पर उन्होंने नई राह दिखाते हुए समाज को अपनी रूढ़िग्रस्त मान्यताओं का त्याग कर पुनर्विचार हेतु प्रेरित किया।

21 वीं सदी के हिंदी सिनेमा में चित्रित नारी की समस्याएँ:

21 वीं सदी का आरम्भ भारतीय हिन्दी सिनेमा में स्त्रीवादी दृष्टिकोण की नई रोशनी लेकर आया। “इक्कीसवीं सदी का पहला दशक बड़ा ही क्रांतिकारी रहा। बीसवीं सदी में जिन सामाजिक परंपराओं की टूटन प्रारंभ हो गई थी, वह इस सदी तक आते-आते पूरी तरह टूट गई। समाज में और परदे पर ये बदलाव साफ तौर पर नजर आ रहे थे। अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रही भारतीय नारी अब अपनी शारीरिक जरूरतों को लेकर बड़ी मुखर हो गई, विशेषकर शहरों में रहनेवाली आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर महिलाएँ। समाज में जैसे-जैसे महिलाएँ अपने स्तर को पुनः परिभाषित कर रही हैं, सिनेमा में भी उनके चरित्र में परिवर्तन आ रहा है।”¹ अतः 21वीं सदी के हिन्दी सिनेमा में स्त्री किरदारों को और अधिक गरिमा और

सशक्तता प्रदान करने की प्रवृत्ति शुरू हुई। नई शताब्दी में नयी रचनात्मकता एवं ऊर्जा से सम्पन्न फिल्मकारों का उदय हुआ जिन्होंने अपनी कथाओं का प्रमुख पात्र नायकों की अपेक्षा नायिकाओं को बनाना शुरू किया। नारी प्रधान फिल्मों के माध्यम से नारी की पीड़ा, घुटन, इच्छा-आकांक्षा, वेदना, समस्या आदि को दिखाने का सराहनीय प्रयास किया गया, जो पिछली सदी के फिल्मों में न के बराबर था। इस संदर्भ में शबाना आजमी कहती हैं कि “पिछले कुछ सालों में मुझे अपने कैरियर के अच्छे और जटिल किरदार मिले। अच्छी बात है कि हिंदी फिल्मों में भी चालीस साल के ऊपर की उम्र की औरत की जिन्दगी पर फिल्में बन रही हैं। मुझे और दूसरी अभिनेत्रियों को अच्छे मौके मिल रहे हैं, अन्यथा मेरी उम्र की अभिनेत्रियाँ तो माँ और भाभी की घिसी-पीटी भूमिकाओं तक ही सीमित हो जाती हैं।”²

अतः 21 वीं सदी कुछ महत्वपूर्ण फिल्मों में व्यक्त नारी समस्याओं को निम्नप्रकार से स्पष्ट करने का प्रयास किया है -

1. विवाह पूर्व गर्भधारण की समस्या: इक्कीसवीं सदी के प्रारंभिक वर्ष में अर्थात् सन 2000 में कुंदन शाह निर्देशित ‘क्या कहना’³ फिल्म में विवाह पूर्व गर्भधारण जैसी समस्या को लिया है। इस फिल्म की नायिका विवाह पूर्व गर्भधारण जैसे वर्जित मुद्दे को उठाते हुए समाज की उस एकपक्षीय सोच पर प्रहार करती है, जो केवल स्त्री को दोषी करार देकर उसे अपमानित करती है। इस फिल्म में एक अनब्याही गर्भवती युवती के दृढ़ निश्चय और समाज के पूर्वाग्रहों के विरुद्ध जाकर अपने बच्चे को जन्म देने की कथा संवेदनशील ढंग से कही गई है। प्रेमी द्वारा अस्वीकार कर दिए जाने पर भी वह अपने गर्भ को छुपाती नहीं है और न ही किसी अन्य स्थान पर जाकर, दुनिया से छुपाकर अपने बच्चे को जन्म देना पसंद करती है। वह स्वयं



को सँभालते हुए समाज से संघर्ष करने की ठान लेती है। वह अपने गर्भ को लेकर शर्मिन्दा महसूस नहीं करती बल्कि फिर से सामान्य जीवन जीने की ओर अग्रसर होती है। फिल्म का क्लाइमेक्स समाज की पुरातनपंथी सोच पर करारी चोट करता है, जो मानती है कि अनब्याही माँ के समक्ष जब भी उसके बच्चे का जैविक पिता शादी का प्रस्ताव रखे तो उस स्त्री को स्वीकार कर लेना चाहिए। फिल्म इक्कीसवीं सदी की चेतनायुक्त और सजग स्त्री की सोच को समाज के सामने प्रस्तुत करती है।

2. भ्रूण हत्या की समस्या: भ्रूण हत्या हमारे समाज के लिए एक कलंक है। बेटे की चाह में अंधे बने लोग स्त्री के गर्भाशय में ही बेटे की हत्या करने का बड़ा अपराध करने में धन्यता मानते हैं, इसके लिए स्त्री भी तैयार होती है। सन 2003 में मनीष झा के निर्देशन में बनी फिल्म 'मातृभूमि: अ नेशन विदाउट वुमन'⁴ फिल्म भ्रूण हत्या समस्या को रेखांकित करती है। इस फिल्म में स्त्रीविहीन होते समाज की रोंगटे खड़े कर देने वाली त्रासदी का चित्रण प्रभावशाली ढंग से किया है। इस फिल्म की नायिका कल्कि अत्याचार, पीड़ा और दुःख-दर्द की अमानवीयता का चरम छूने के बाद भी अंततः हार नहीं मानती। अपनी नवजात बच्ची को सुरक्षित जीवन देने की जो चमक उसकी आँखों में प्रसव उपरांत आती है, वह कल्कि के अदम्य साहस और उसकी जिजीविषा को बयान करती है। कुल मिलाकर यह फिल्म स्त्री के महत्त्व को उजागर करती है, भ्रूण हत्या के खिलाफ आवाज़ उठाती है और स्त्री के साथ किसी वस्तु की तरह व्यवहार न करके इन्सान समझे जाने के लिए बाध्य करती है।

3. विधवा नारी की समस्या: हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं, फिर भी आज कई ऐसे लोग हैं, जो विधवा महिलाओं को सम्मानपूर्वक जीवन जीने नहीं देते। इसलिए आज भी विधवा

महिलाओं की समस्या कई जगह पर देखी जाती है। सन 2007 में प्रदर्शित दीपा मेहता की फिल्म 'वाटर'⁵ विधवा पुनर्विवाह पर आधारित है। यह फिल्म टोरंटो अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में सितम्बर, 2005 में दिखाई गई थी। भारत में आज भी समाज में अनेक ऐसे समुदाय हैं जहाँ विधवा स्त्री को अभिशप्त जीवन जीने को बाध्य कर दिया जाता है, विधवाओं के पुनर्विवाह को वर्जित माना जाता है और विधवा आश्रमों के नाम पर अनैतिक कारोबार चलाये जाते हैं। यह फिल्म वाराणसी के एक आश्रम में रहने वाली विधवाओं की अभिशप्त जिंदगी के माध्यम से बाल विवाह जैसी कुप्रथा का बहिष्कार करती है। साथ में विधवा विवाह का समर्थन भी करती है और उन्हें समाज में सम्मानपूर्वक जीवन देने की बात कहती है। इस फिल्म की विधवा नायिका शकुंतला के माध्यम से अन्याय के खिलाफ संघर्ष करके चेतना और साहस दिखाया है।

उसी प्रकार सन 2006 में प्रदर्शित निर्देशक नागेश कुकनूर की फिल्म 'डोर'⁶ देश के दो अलग-अलग भागों में रहने वाली जीनत और मीरा नामक दो महिलाओं की विपरीत जिंदगियों को मित्रता और विश्वास की एक डोर से बाँध कर पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की, खासकर विधवा महिलाओं की करुण स्थिति को दिखाती ही है, साथ ही उनके सपनों और उनकी स्वतंत्र जीवन जीने की आकांक्षा को भी समाज के समक्ष प्रस्तुत करती है।

4. नारी शोषण की समस्या: मध्ययुगीन काल से लेकर 21 वीं सदी तक आई महिलाओं की कई समस्याओं के लिए अधिकांश रूप में पुरुषी सत्ता को ही जिम्मेदार माना गया है, लेकिन कुछ समस्या महिलाओं ने अपने लिए खुद तैयार की हैं। प्रसिद्ध निर्देशक मधुर भंडारकर की सन 2008 में आई 'फैशन'⁷ फिल्म फिल्म इंडस्ट्री में होनेवाले नव कलाकार के शोषण को उद्घृत करती है। एक छोटे शहर की एक



महत्वाकांक्षी लड़की के सुपर मॉडल बनने और सुपर मॉडल से साधारण लड़की हो जाने की कथा के माध्यम से फैशन इंडस्ट्री की तमाम विद्रूपताओं को हमारे सामने लाती हैं। फिल्म में दिखाया गया है कि कैसे यह इंडस्ट्री नव प्रतिभाओं का शोषण करती है और जब चाहे उनका मनचाहा इस्तेमाल करके बाहर रास्ते पर फेंक देती है। इस फिल्म की नायिका मेघना माथुर अवसादग्रस्त स्थिति तक पहुँच जाने के बाद भी पुनः वापसी करती है और आत्मविश्वास के साथ फिर से रैंप पर चलकर सिद्ध करती है कि यदि स्त्री दृढ़ निश्चय कर ले तो परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी विपरीत हों वह उनपर विजय प्राप्त कर सकती है। यह फिल्म फैशन इंडस्ट्री की चमक-दमक के भीतर छुपी कालिम तस्वीर को तो दिखाती ही है पर साथ ही युवा प्रतिभाओं को इससे सचेत रहकर अपने बूते आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती है और उनमें नवीन चेतना का संचार करती है। अतः इसको लेकर डॉ. अनिल काम्बले कहते हैं कि “हर लड़की को ग्लैमरस, एंटरटेनमेंट इंडस्ट्रीज में अपना कैरियर बनाने से पहले उस क्षेत्र की दुनिया, संस्कृति, मानसिकता का अध्ययन करना चाहिए। ...दूसरों की अपेक्षा स्वयं पर अधिक विश्वास करना चाहिए। तभी फैशन इंडस्ट्रीज में कैरियर बनाने के बारे में सोच रही हर लड़की मेघना की तरह एक सक्सेसफुल सुपर मॉडल बन सकती है।”⁸

स्वयं को सभ्य मानने वाले समाज में महिलाओं का शोषण करने की बात छुपी नहीं हैं। आज भी ऑफिस में काम करने वाली महिलाओं के साथ शोषण की समस्या एक आम बात हो गयी है। सन 2016 में प्रदर्शित निर्देशक अनिरुद्ध रॉय चौधरी की फिल्म ‘पिंक’⁹ तीन आत्मनिर्भर कामकाजी युवतियों के शारीरिक शोषण की कथा है। इस फिल्म के माध्यम से वे तीनों बिल्कुल अलग और सहज अंदाज़ में स्त्री शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाती है। इस फिल्म के माध्यम से

समाज को यह संदेश दिया है कि जब कोई भी स्त्री ‘नो’ कहती है तो उसका मतलब ‘नो’ अर्थात् ‘नहीं’ ही होता है। अतः इस फिल्म में समाज द्वारा स्त्री और पुरुष वर्ग के लिए निर्धारित दोहरे मापदंडों तथा स्त्रियों के प्रति पुरुषों की संकीर्ण रुढ़िवादी सोच पर भी गहरी चोट की गई है।

5. शिक्षा की समस्या: वर्तमान परिवेश में अंग्रेजी भाषा में बोलना शिक्षित होने का प्रमाण माना गया है। इसको लेकर अंग्रेजी भाषा से अनभिज्ञ एक साधारण महिला की समस्या को ‘इंग्लिश-विंग्लिश’¹⁰ फिल्म में दिखाया है। सन 2012 में प्रदर्शित निर्देशक गौरी शिंदे की निर्देशन में बनी फिल्म ‘इंग्लिश-विंग्लिश’ एक गृहणी के आत्मविश्वास को दिखाती है। इस फिल्म की नायिका शशि एक छोटी उद्यमी है, जो घर से ही स्नेक्स बनाने का व्यवसाय करती है। वह अंग्रेजी भाषा में कमजोर होने की वजह से अपने ही घर में मज़ाक का पात्र बनती रहती है और इसीलिए अपमानित महसूस करती रहती है। बाहर भी उसे इसी तरह के अनुभवों का सामना करना पड़ता है। इस स्थिति को बदलने के लिए वह अपनी कमाई से चुपके से अंग्रेजी सिखने के क्लास में दाखिला लेती है और अंग्रेजी में बात करने में स्वयं को समर्थ बनाकर सभी को आश्चर्यचकित कर देती है। यह फिल्म एक स्त्री के दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास की कहानी है, जो भारतीय समाज के उस कटु सत्य को सहज ढंग से दिखाती है जहाँ अंग्रेजी में बात करने को शिक्षित होने के अप्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में देखा जाता है।

6. आत्मविश्वास की समस्या: आत्मविश्वास और हिम्मत ये दो ऐसे शब्द हैं, जिसके बलबूते पर असंभव कार्य संभव किया जाता है। हिंदी सिनेमा में ‘क्वीन’, ‘हिचकी’ और ‘पंगा’ नामक फिल्मों की नायिकाओं में पहले इसी आत्मविश्वास की कमी को दिखाया है, बाद में वह उनपर विजय प्राप्त करती है। सन 2014 में विकास बहल के निर्देशन में बनी फिल्म



‘क्वीन’¹¹ मध्यवर्गीय संस्कारों में पत्नी-बढ़ी घबराई-सकुचाई-सी, थोड़ी-थोड़ी ‘नर्वस’ सी रहने वाली पर जिंदादिल लड़की के आत्मविकास की कहानी है। इस फिल्म की नायिका रानी (क्वीन) की शादी तय होती है। शादी से एक दिन पहले उसका मंगेतर शादी से इसलिए इनकार करता है कि रानी उसके ‘स्टेटस’ से मैच नहीं खाती है। यह सुनकर रानी का आत्मविश्वास टूट जाता है। अपने पति के साथ हनीमून पर पेरिस जाने के सपने संजोने वाली रानी अपने परिवार की अनुमति लेकर अकेले ही हनीमून की यात्रा पर निकल पड़ती है। अंतः यह यात्रा ही उसके खोए हुए आत्मविश्वास को वापिस लाती है और जीवन को जीने का नया नज़रिया उसे मिल पाता है। पूरी फिल्म स्त्री जीवन के छोटे-छोटे प्रसंगों के ताने-बाने से बुनी गई है और सहज-स्वाभाविक रूप से एक ‘नर्वस’ स्त्री के आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनने का चित्रण करती है।

उसी प्रकार सन 2018 में सिद्धार्थ पी. मल्होत्रा की फिल्म ‘हिचकी’¹² में नैना माथुर नामक टूरेट सिंड्रोम से ग्रस्त एक शिक्षिका के आत्मविश्वासी और प्रेरक व्यक्तित्व की कथा दिखाई गई है। अपनी इस बीमारी के चलते उसे जब-तब अजीब ढंग से हिचकियाँ आती रहती हैं, जिसे उसके पिता भी पसंद नहीं करते हैं। इसलिए वह अपने विद्यार्थियों में हँसी का कारण बनती है। आत्मविश्वासी नैना हार नहीं मानती है और अठारह बार इंटरव्यू देने के बाद उन्नीसवीं बार शिक्षिका की नौकरी पाने में सफल हो जाती है। विद्यालय और कक्षा में अनेक बार हतोत्साहित करने वाले पत्नों और घटनाओं का सामना उसे करना पड़ता है, परंतु वह मजबूत इरादों के साथ डटी रहती है और अंत में वह विद्यार्थियों की प्रिय एवं उत्तम शिक्षिका बनकर दिखाती है। इस तरह यह फिल्म एक स्त्री द्वारा अपनी कमजोरी को अपनी ताकत में परिवर्तित कर देने की प्रेरक कथा का चित्रण है।

एक स्त्री के आत्मविश्वास और सपनों को साकार करने वाली ‘पंगा’¹³ नामक फिल्म निर्देशक अश्विनी अय्यर तिवारी ने सन 2020 में प्रदर्शित की। इस फिल्म की नायिका जया अपने सपने किन्हीं कारणवश पूरा नहीं कर सकी थीं किन्तु उन सपनों को पूरा करने की दबी-दबी सी इच्छा ज़रूर रखती हैं। कभी कबड्डी चैंपियन रही जया निगम, जो अब पत्नी और माँ बन चुकी हैं, अपनी हिम्मत और आत्मविश्वास से पुनः खूब अभ्यास करती हैं और मैदान में उतर फिर से सफलता प्राप्त करती हैं।

7. नारी स्वतंत्रता की समस्या: हमारे देश को आजाद होकर 75 साल से भी अधिक वर्ष बीत गए। लेकिन आज भी समाज के कुछ हिस्से में नारी को आजादी देने की मानसिकता नहीं है। भारतीय संविधान ने सभी को स्वतंत्रता के अधिकार दिये हैं, फिर भी आज की स्त्री इस आजादी के कोसों दूर है। सन 2016 में बनी फिल्म ‘लिपस्टिक: अंडर माई बुरखा’¹⁴ में निर्देशक अलंकृता श्रीवास्तव ने महिलाओं के इसी आजादी की चर्चा की है। इस फिल्म की चार महिला पात्रों की कथा के माध्यम से स्त्रियों की स्वतंत्रता और उनके सपनों-आकांक्षाओं को समझाने का प्रयास किया है। फिल्म के चारों पात्र अपनी-अपनी जिंदगियों से संघर्ष करते हुए एक उम्मीद लिए अपनी परिस्थितियों से विद्रोह करती नज़र आती हैं।

8. ग्रामीण महिलाओं की समस्या : ग्रामीण भारत की अनेक समस्याओं में से शौचालय की समस्या महत्वपूर्ण समस्या मानी जाती है। खासकर जो महिलाएँ शिक्षित हैं, उनके लिए यह एक गंभीर समस्या है। सन 2017 में प्रदर्शित फिल्म ‘टॉयलेट- एक प्रेम कथा’¹⁵ इस फिल्म में निर्देशक नारायण सिंह ने शौचालयों की अनुपलब्धता के कारण महिलाओं को होने वाली परेशानियों और समस्याओं से अवगत कराया है और शौचालयों की हर घर में ज़रूरत पर जोर



दिया है। फिल्म की नायिका जया के माध्यम से स्त्रियों में खुले में शौच की परंपरा के विरुद्ध आवाज़ उठाने और स्वच्छता के प्रति जागृति को चेतया गया है। भारत के कई ग्रामीण इलाकों में आज भी महिलाओं को इस तरह की समस्या से जूझना पड़ता है, क्योंकि आज भी अनेक ग्रामीण लोग घर में शौचालय होने को सभ्य और उचित नहीं मानते। यह फिल्म उनकी इसी सोच को बदलने का प्रयास है।

9. मध्यवर्ग की आर्थिक समस्या: महानगरों में रहनेवाले मध्यवर्ग परिवार को अक्सर आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ता है। सन 2017 में सुरेश त्रिवेणी के निर्देशन में आई फिल्म 'तुम्हारी सुलु'¹⁶ इसी समस्या को चित्रित करती है। इस फिल्म की आधुनिक मध्यवर्गीय गृहणी सुलोचना उर्फ सुलु के माध्यम से महानगरीय मध्यवर्गीय जीवन की परेशानियों के बीच बेहतर जीवन जीने के सपने देखने वाली घरेलू स्त्रियों की कहानी को साकार करती है। इस फिल्म की नायिका सुलु भी अपने परिवार को सुचारू रूप से चलने में आर्थिक सहायता करना चाहती। इसके लिए वह रेडिओ कार्टेस्ट में हिस्सा लेने से लेकर आरजे तक का सफ़र भी तय करती है। कुल मिलाकर यह फिल्म संदेश देती है कि वर्तमान समय में गृहणियों के लिए अनेक विकल्प मौजूद हैं, जिन्हें वह पार्ट-टाइम जॉब के रूप में अपना कर अपने सपनों को पंख दे सकती हैं।

10. घरेलू हिंसा और पुरुषी अहंकार की समस्या: सन 2020 में अनुभव सिन्हा द्वारा निर्देशित फिल्म 'थप्पड़'¹⁷ एक विवाहित स्त्री अमृता के माध्यम से स्त्रियों पर की जाने वाली घरेलू हिंसा और पुरुषी सत्ता के मुद्दे को सहज और अलग ढंग से उठाती है। पति-पत्नी के बीच प्रेम होने के बावजूद पति आक्रोशवश सबके सामने पत्नी अमृता को थप्पड़ मार देता है। आगे चलकर पति अपनी पत्नी से माफ़ी भी मांगता है लेकिन अपमानित अमृता उस थप्पड़ की गूँज को भूला नहीं पाती है।

घर-परिवार के लोग उसे समझाते भी हैं कि पति-पत्नी में लड़ाई-झगड़े तो होते ही रहते हैं। फिल्म के यह दृश्य समाज की उस संकीर्ण सोच को दिखाते हैं, जहाँ अप्रत्यक्ष रूप से पुरुषों को अव्वल समझा जाता है। अमृता भी मानती है कि यदि मानसिक परेशानियों के चलते पति अपनी पत्नी पर हाथ उठा भी दे तो इस बात को ज्यादा तूल नहीं देना चाहिए किन्तु बात सिर्फ एक थप्पड़ की नहीं होती है बल्कि एक स्त्री के अंतर्मन पर लगे आघात की होती है, उसके आत्मसम्मान की होती है, उसके वजूद, उसकी अस्मिता की होती है। यह फिल्म अमृता के पढ़े-लिखे आधुनिक स्त्री के सशक्त किरदार द्वारा यह संदेश प्रभावशाली ढंग से सम्प्रेषित करती है।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि इक्कीसवीं सदी के हिंदी सिनेमा में नारी की पीड़ा, वेदना, दुःख-दर्द, शोषण, घरेलू हिंसा आदि को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। हिंदी सिनेमा स्त्रियों के जीवन की बड़ी-बड़ी समझे जाने वाली समस्याओं-परेशानियों के प्रति ही नहीं बल्कि रोजमर्रा की मामूली-सी लगने वाली समस्याओं के प्रति भी गंभीर हुआ है। जिस प्रकार इक्कीसवीं सदी के हिंदी सिनेमा में नारी की विभिन्न समस्याओं को चित्रित किया है, उसी प्रकार नारी उस समस्याओं को अपने संघर्ष से पराजित करके अपने आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय को बरकरार रखती हैं। यही इन फिल्मों की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

संदर्भ सूची:

1. सिनेमा में नारी - शमीम खान, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2008, पृ.15



2. सिनेमा समकालीन सिनेमा- अजय ब्रह्मात्मज वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2012, पृ. 92
3. क्या कहना (फिल्म) - निर्देशन- कुंदन शाह, प्रदर्शित सन 2000
4. मातृभूमि : अ नेशन विदाउट वुमन (फिल्म) - निर्देशन- मनीष झा, प्रदर्शित सन 2003
5. वाटर (फिल्म) - निर्देशन - दीपा मेहता, प्रदर्शित सन 2007
6. डोर (फिल्म) - निर्देशन - नागेश कुकनूर, प्रदर्शित सन 2006
7. फैशन (फिल्म) - निर्देशन- मधुर भंडारकर, प्रदर्शित सन 2008
8. मधुर भंडारकर की फिल्मों में स्त्रीवादी मीडिया दृष्टि - डॉ. अनिल काम्बले, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2016, पृ. 340
9. पिक (फिल्म) - निर्देशन - अनिरुद्ध रॉय चौधरी, प्रदर्शित सन 2016
10. इंग्लिश-विंग्लिश (फिल्म) - निर्देशन - गौरी शिंदे, प्रदर्शित सन 2012
11. क्वीन (फिल्म) - निर्देशन - विकास बहल, प्रदर्शित सन 2014
12. हिचकी (फिल्म) - निर्देशन - सिद्धार्थ पी. मल्होत्रा, प्रदर्शित सन 2018
13. पंगा (फिल्म) - निर्देशन - अश्विनी अय्यर तिवारी, प्रदर्शित सन 2020
14. लिपस्टिक : अंडर माई बुरखा (फिल्म) - निर्देशन - अलंकृता श्रीवास्तव, प्रदर्शित सन 2016
15. टॉयलेट- एक प्रेम कथा (फिल्म) - निर्देशन - नारायण सिंह, प्रदर्शित सन 2017
16. तुम्हारी सुलु (फिल्म) - निर्देशन - सुरेश त्रिवेणी, प्रदर्शित सन 2017
17. थप्पड़ (फिल्म) - निर्देशन - अनुभव सिन्हा, प्रदर्शित सन 2020